पेशाब से हाथ क्यों धोते हैं बंदर?

जीव जगत में विचित्र घटनाएं घटती हैं और उनकी व्याख्या करना काफी मुश्किल होता है। जैसे यही देखिए कि कई बंदर अपने हाथ-पैर अपनी ही पेशाब से धोते रहते हैं। आम तौर पर यह माना गया था कि यह साफ-सफाई का एक तरीका होगा। कुछ लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा करने पर बंदर पेड़ों की शाखाओं पर बेहतर पकड़ बना पाते हैं। काफी लोग मानते थे कि यह तापमान नियंत्रण का एक तरीका है। जब गर्मी बढ़ती है तो बंदर अपने पैरों पर पेशाब करके उसके वाष्पन के ज़रिए शरीर का तापमान कम रखने की कोशिश करते हैं। मगर हाल ही में किए गए कुछ प्रयोगों से पता चला है कि खुद के हाथ-पैरों पर पेशाब करना सामाजिक संप्रेषण का अंग है।

यह बात तो काफी समय से जानी-मानी है कि जानवर गंध का उपयोग परस्पर संवाद के लिए करते हैं। जैसे कुत्ते पेशाब के माध्यम से अपना इलाका तय करते हैं। मगर खुद पर पेशाब करना संवाद का माध्यम कैसे हो सकता है?

पूल्सविले के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एनिमल सेंटर के किमरान मिलर और उनके साथियों ने दस महीने तक कुछ कापुचिन बंदरों को बंदी अवस्था में रखा। यहां के तापमान और नमी को नियंत्रित किया जा सकता था। शोधकर्ता प्रतिदिन तापमान,नमी और बंदरों के खुद पर पेशाब करने की दर को नापते थे। *अमेरिकन जर्नल ऑफ प्राइमेटोलॉजी* में प्रकाशित अपने शोध पत्र में मिलर व साथियों ने बताया है कि पेशाब करने की दर और तापमान का कोई सम्बंध नहीं देखा गया।

इसके विपरीत पेशाब से धुलाई और ध्यान चाहने के बीच सम्बंध देखा गया। समूह के प्रमुख नर (अल्फा मेल) अपने पैरों और हाथों पर तब ज़्यादा बार पेशाब करने लगते थे जब कोई मादा उनकी ओर आने की कोशिश करती। शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि वे इस तरह से उसे बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं।

यह भी देखा गया कि 87 प्रतिशत लड़ाइयों या आक्रामक घटनाओं के बाद पराजित बंदर पेशाब से नहा लेता था। ऐसा लगता है कि यह हमदर्दी पाने के लिए किया जाता होगा । मगर इस मामले में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले और अनुसंधान की ज़रूरत होगी।

बहरहाल, इस अनुसंधान ने इस पुराने सिद्धांत पर तो सवालिया निशान लगा ही दिया है कि कापुचिन बंदर खुद पर पेशाब करके तापमान नियंत्रण करते हैं। एक निष्कर्ष यह भी निकलता है कि जंतु मूत्र त्याग का उपयोग सिर्फ उत्सर्जन के लिए नहीं करते। ***(स्रोत फीचर्स)***